# ''जाग जाग उठ जाग रे''

## वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश अगस्त, 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

इन्सान को यह जो मनुष्य जामा मिला है ना, यह बड़े भागों से मिला है। इसमें सबसे बड़ी ग़र्ज जिसको हमने पाना है, वह अपने आपको जन्म मरन से छुड़ाना है। प्रभु को पाना है। और मालिक की गोद में चले जाना है। यह आदर्श था सबसे बड़ा जो मनुष्य जीवन का पाकर हमारे सामने था। मगर अपने ही कर्मों के सबब से हम दिनों दिन वही काम करते रहे जो हमको उस प्रभु से दूर ही ले जाते रहे। महापुरूष जब आते हैं वह कहते हैं, देख भई तुझे मनुष्य जीवन भागों से मिला है। यह तेरा वक्त है, प्रभु के पाने का। और काम सब गैर जरूरी हैं। सबके लिये इज्ज़त है। तुम्हारे उस ऊँचे आदर्श को पाने के लिये मददगार चीजें हैं, उनमें उलझो नहीं, उन से फ़ायदा उठाकर अपनी हकीकत को पा जाओ, ताकि तुम्हारा आना जाना खत्म हो जाये। तो इसके लिये महापुरूष क्या कहते हैं, कि ऐ इन्सान तुझे सबसे बड़ा रूतबा मिला है, तू सबकी सरदार जूनी है।

**सर्ब जून तेरी पनहारी। सबं में तेरी सिकदारी॥**

सारी जूने तेरी सेवा के लिये बनाई गई हैं, सब में तू सरदार है, सरदार। बादशाह ने भेज दिया वायसराय को, जाओ भई फलाने मुल्क में तुम हुक्मरानी (राज) करो। यह आ गया, इस बिलायत में, मगर सो रहा है, हुक्मरानी क्या करनी है। कमान्डर इन चीफ जो बना पड़ा है ना, वही सब फौजें लेकर बादशाह के खिलाफ लड़ रहा है, यही समझो। आत्मा की फजीलत (बड़ाई) को सब महापुरूषों ने बयान किया है।

**बादज खुदा तोई किस्सा मुखतसर।**

प्रभु के बाद दूसरा दर्जा इन्सान का है। थोड़े से लफ्ज़ों में इतना ही बयान कर लो। और सब महापुरूषों ने यह कहा है।

**तू थी सत्नाम की गोती।**

तू तो सत्नाम की गोत वाली थी भई, गोत इन्सान छोड़ता नहीं, अपना गोत

आदमी छोड़ता नहीं, अपने गोत ही में रहना चाहता है, मगर यह मन चूड़े के साथ लग गई है। अपनी इज्जत गवा ली, जलील और ख्वार हो रही है, मन और इन्द्रियों के हाथ ! इसने राज करना था। वह वायसराय था, Regent था, उस प्रभु का, यह जिसम दिया था कि यह सब दुनियां पर हुक्मरानी करे, समझे Great is man मगर क्या हो रहा है ? यह उलटे और वह काम कर रहा है जो इसको उस तरफ ले जाने में उलटी रूकावटें बन रही हैं। इसलिये महापुरूष कहते हैं कि ऐ इन्सान देख ! तुझे दुनियां में भेजा गया। बड़े भागों से यह मनुष्य जीवन मिला है। इसमें तूने अपने आप पर हुकमरानी करनी थी, सब दुनियां पर हुक्मरानी करनी थी, याद रखो। मगर तुम भूल गये, बाहर के रसों-कसों में सो गये, आदर्श सामने न रहा। था कुछ और, बन कुछ और गया। आत्मा चेतन स्वरूप थी। इसने प्रभु को पाना था। यह इन्द्रियों के भोगों रसों में मस्त हुआ पड़ा है, जो भोग भोगेगा वह दुखी होवेगा। भोगों से रोग, रोगों से सोग बनेंगे। हाय-हाय करता है, पैदा भी होता है, रोता ही आता है, और सारी उम्र रो रोकर , मरता भी रोता ही चला जाता है। अगर मनुष्य जीवन पाकर यह अपने आदर्श को पा ले, क्या इस जिस्म रूपी विलायत में यह रह रहा है, इस पर हकूमत कर ले, इनको दमन कर ले, अपने काबू में कर ले, यहां भी इज्जत पा जाये, और मनुष्य जीवन भी सफल हो जाये। तो महापुरूष जब भी आये हैं, इसी बात की तरफ तवज्जो दिलाते रहे कि ऐ इन्सान ! तू इन्सान है। तू सबसे पुराना है। परमात्मा ने इन्सान पैदा किये हैं। इसी आदर्श को पाने के लिये ऋषि, मुनि, महात्माओं ने समाजें बनाई हैं। इनमें रहकर अपना जीवन उनके हुक्म के मुताबिक बसर करके प्रभु की गोद में चले जाओ। बस ! किसी समाज में रहो, काम यही करना था। मगर नतीजा क्या हो रहा है ? हम समाजों में जरूर दाख़ल हुये। किसी समाज में रहना बरकत है। मगर इसमें रहकर हम अपने आदर्श को भूल गये हैं। हमने प्रभु का पुजारी बनना था। हम समाजों के पुजारी बन गये। समाजें सब अच्छी हैं। रहो जरूर किसी समाज में, नहीं तो Corruption हो जायेगी, पर किसी समाज में रहते हुये अपने आदर्श को भूल जाना, उसी जकड़ में मर जाना, जन्म को बरदबाद कर देना है। तो महापुरूष क्या कहते हैं, बार बार इसी तरफ तवज्जो दिलाते हैं कि ऐ इन्सान ! तूने करना क्या है, और कर क्या रहा है। तो इस वक्त आपके सामने, यहां पर आपको पता है सारे महापुरूषों की बानी ली जाती है, और सब महापुरूष एक ही रोना रोते रहे हैं, जीव को चिताते रहे हैं

कि ऐ इन्सान ! तुझे मनुष्य जीवन भागों से मिला है, तू कुछ कर ले। तू इन्द्रियों के रसों-भोगों में लम्पट होकर अपनी हकीकत से दूर हो रहा है। अन्तर से सो रहा है, बाहर से जाग रहा है, बड़ा चातुर, बड़ा सयाना, बड़ा आलिम, बड़ा फाज़िल बन रहा है, मगर तुझे न अपने आपकी सुधि है न अपने जीवन आधार की तरफ तवज्जो है। कहते हैं ऐ इन्सान ! तू होश में आ और जाग। क्यों सो रहा है। कबीर साहब ने फरमाया,

**जाग प्यारी अब काहे सोवे। रैन गई दिन काहे को खोवे ॥**

ऐ प्यारी रूह, अब ही जाग। मनुष्य जीवन का दिन चढ़ा है। अगर अब भी तू सोती रही तो जागेगी कब ? मनुष्य जीवन ही एक जागने का वक्त है। मन इन्द्रियों की गुलामी से निकल कर अपने आपको पाकर, प्रभु की गोद में जाना है। कहते हैं, यह काम अगर तूने अब नहीं किया तो कब करेगी ?

**पौड़ी छुड़की फिर हाथ न आवे एहला जन्म गवाया।**

एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी हाथों से निकल गई, अगर यह काम नहीं किया, तो फिर या नसीब कब आपको मनुष्य जीवन मिले, फिर तुम यह काम कर सको। गौर से सुनिये। पिछली दफ़ा गुरूबानी ली गई थी, इस दफ़ा आपके सामने कबीर साहब का शब्द आ रहा है। हर एक महापुरूष की बानी लो, सब एक ही रोना रोते हैं। हज़रते इन्सान का रोना है, कि ऐ इन्सान ! तू जाग ! अपनी फजीलत को सम्भाल तेरा तखत और ताज सूना पड़ा है। जाकर सम्भाल समझे ! गौर से सुनिये वह क्या फर्माते हैं।

**क्या होवे ग़फलत के मारे, जाग जाग उठ जाग रे।**

जिस नजर से महापुरूष हमको देखते हैं, वह नजर कुछ और है। वह देखते हैं कि सारा जहान ही सोया पड़ा है। कहां पर ? मन इन्द्रियों के घाट पर, फैलाव के कारण अन्तर से सो रहा है। मनुष्य जीवन, जागने का वक्त मिला था। इसी में जाग सकता था। समझे ! मगर यह सो रहा है। अपने आपको सुधि नहीं। देखिये परमात्मा ने यह जो मनुष्य जीवन दिया है ना, यह जिस्म, बड़ा अजीबो गरीब मकान है। इसमें जो इन्द्रियां लगी हैं, यह बाहर की तरफ खुलती हैं। अन्तर की तरफ नहीं खुलती। तुम बाहर तो देख सकते हो, अन्तर तो नहीं देख सकते ना, तो इसमें इन्द्रियां इस तरह

लगी हैं, जो बाहर की तरफ खुलती हैं। बाहर के Impressions लेते हैं, बाहर की तरफ हम जाग रहे हैं, अन्तर की तरफ सो रहे हैं। तो अन्तर से जागने का एक रस्ता प्रभु ने हर एक इन्सान के अन्तर रखा है, और वह कौन सा है ? नौ द्वारे तो प्रगट हैं इसके —

**नौं द्वारे परगट किया दसवां गुप्त रहाया।**

दो आंखों के, दो कान, नासिका, मुंह, गुदा और इन्द्री। यह सब इन्द्रे बाहर काम कर रहे हैं। दसवां द्वार इसमें है, जो पिण्ड से ऊपर अन्तर की तरफ खुलता है, मगर उसका इसको पता ही नहीं। वह कहते हैं जागने के लिये तुम्हें बाहर से हटना होगा, बाहर से सोना होगा, अन्तर जागना होगा। तो सारे महापुरूष यह कहते हैं। वह आकर क्या देखते हैं, कि सारी दुनियां ही सो रही है। आलिम भी सो रहे हैं, बेइलम भी सो रहे हैं, अमीर, गरीब, लेक्चर देने वाले, लेक्चर सुनने वाले, सब ही सो रहे हैं।

**हमा आलम खुफता तो हम खुफता। खुफता रा ख़ुफ़ता कै कुनद बेदार॥**

सारा जहान सोया पड़ा है, अरे भई साये हुये को सोया हुआ कैसे जगा सकता है ? यह पुकार आज की नहीं, जबसे ऋषि, मुनि महात्मा जो पुरातन समय से हुये हैं, सब यही कहते रहे। वेद भगवान कहता है। Awake ! Arise ! and Stop not till the Goal is reached. कि जागो ! उठ खड़े हो ! और उस वक्त तक सांस न लो, जब तक तुम मन्जिल मकसूद को न पा जाओ। यह चीज़ तुमने मनुष्य जीवन ही में करनी है और किसी में नहीं। यह कर्म क्षेत्र है। यही और और महापुरूषों ने कहा है।

**उठ जाग वटावड़या तैं क्यों चिर लाया।**

गुरू अर्जुन साहब फर्माते हैं, ऐ रस्ते के मुसाफिर तू उठ, और जाग। देखो वही लफ्ज हैं। वह संस्कृत में हैं, यह पंजाबी में हैं। ऐ रस्ते के मुसाफिर तू उठ और जाग। तू क्यों देर कर रहा है ? तेरा वक्त गुजरा जा रहा है। समय जो मिला है सफर करने को, अगर उसमें सफर तय नहीं किया तो फिर कब करोगे ? तो बड़े ज़ोरदार लफ्जों में कह रहे हैं, उठ, जाग ! तो कहते हैं, जाग जाग तू सो रहा है। कहां पर सो रहा है, आगे बतायेंगे। अन्तर में सो रहा है, बाहर से जाग रहा है, नहीं तो अन्तर की होश न हो ? देखिये ना हमारी आत्मा बड़ी भारी ताकत रखती है। यह (मनुष्य) बादशाह का लड़का है, यह उसका वायसराय है, Regent है कहो। समझे ! यहां इसको भेजा था

हुक्मरानी करने को। मनुष्य जीवन पाकर इन्द्रियों पर फतेह (विजय) पाकर अपने आपकी तरफ़ और उस प्रभु की तरफ होश लाने के लिये मिला था। मगर अगर यह नहीं किया तो क्या किया ? यह सो रहा है। बस। इन्द्रियों के भोगों रसों में बेअख़्त्यार ! कभी ख्याल भी नहीं आया कि क्या करें। सारी उमर इसी हालत में रहकर जब यकायक यह जिस्म छोड़ना पड़ता है, आखर छोड़ना तो सबने है, कौन रहा और कौन रह सकता है।

**राना राव न को रहे रंक न तंग फकीर। वारी आपो आपनी कोई बान्धे न धीर॥**
**कहां सो भाई मीत है देख नयन पसार। एक चाले इक चालसी सबको अपनी बार॥**

सब जा रहे हैं, सफ़र खत्म हो रहा है। जिन्दगी का यह जो वक्त आपको मिला है, मनुष्य जीवन का, वह खत्म हो रहा है। सफ़र बहुत लम्बा है। कहां यह मन इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, कहां इसने पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड, पारब्रह्मण्ड से पार, सत्लोक, सचखण्ड जाना है। ऐ इन्सान तू जाग। क्यों सो रहा है ? होश में आ। यह उपदेश किन लोगों को है ? सब आत्मा देहधारियों को। यहां समाजों का सवाल नहीं। सब समाजें आत्मा देहधारियों की बनी हुई हैं। और समाजों में हम दाखल इसीलिये हुये थे कि हम जाग उठें, सो रहे हैं। समझ आ गई कहां सो रहे हो ? इन्द्रियों के भोगों रसों में ! मन हमारा मददगार चीज़ थी, नौकर था, कमान्डर इन चीफ मिला था काम कराने के लिये, यह इस पर सवार हो रहा है। यह इसकी गति बन रही है।

**क्या सोवे गफलत के मारे, जाग जाग उठ जाग रे।**

गफलत कहो, अविद्या कहो, माया कहो, जेहल कहो, एक ही बात है। सब भूल में जा रहे हैं। अन्तर से बेसुध और बेखबर हैं, बाहर जाग रहे हैं। आलम भी हैं, फाजल भी हैं, सब कुछ हैं, मगर जागे नहीं। जो जागा नहीं, उसके पास बैठकर तुम कैसे जाग सकते हो ? तो इस ख़्वाबे ग़फ़लत कहो, ख़्वाबे ख़रगोश कहो, इससे जागने के लिये किसी जागते पुरूष की संगत की जरूरत है, जो हमें जगा सके।

**और तेरे कोई काम न आवे, गुरू चरणन उठ लाग रे।**

कहते हैं। जागने के लिये क्या इलाज है ? कहते हैं, किसी जागते पुरूष के चरणों में जाओ। जो जागता पुरूष होगा ना, वह तुमको जगा देगा। कैसे ? हम कहां सो रहे ?

मन इन्द्रियों के घाट पर ! उसके पास यह समर्था है, वह तुमको इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाने के लिये Way up को समर्थ है, Competent है । जो खुद जागे नहीं आपको क्या करेंगें ? Elementary साधन जो हैं ना वही सिखायेंगे । क्या, पाठ करो, महापुरूषों की बाणीं का । ठीक है । यह इन्द्रियों के घाट का साधन है । इसमें होश आयेगी, समझ जायेगी । मगर जागना जो है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना, यह समझ तो आ गई कि हम इन्द्रियों के घाट पर सो रहे हैं, फैलाव के कारण, पर कैसे फैलाव से हटकर इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ सकते हैं । इसके लिये केवल ऐसे पुरूष की जरूरत है जो खुद ऊपर गया हो ।

**खैंचें सुरत गुरू बलवान ।**

तो कहते हैं इस सोई हुई हालत से जागने के जितने और साधन तुम कर रहे हो, अपरा विद्या के, वह इसमें मददगार जरूर हैं, मगर जगा नहीं सकेंगे । जमीन की तैयारी तो बना रहे हैं, विचार कर रहे हैं, जरा होश आ रही है कि हम क्या कर रहे हैं ? हम कहां पर सोये पड़े हैं ? कैसे जागें ? कहते हैं इसके लिये जाओ गुरू के चरणों में । गुरू किसको कहते हैं ? जो खुद जाग उठा है, और तुमको जगा सकता है । समझे ! जो खुद ही जागा नहीं ? तो जितने इन्द्रियों के घाट से ताल्लुक रखने वाले साधन हैं उनसे शौक बढ़ेगा, भाव भक्ति बनेगी, ज़मीन की तैयारी होगी, यह अच्छे कर्म हैं, इनका फल आपको स्वर्ग आदि मिलेगा, मगर फिर आना जाना पड़ेगा । यह पित्रियान पन्थ है । जागने का सवाल कब होगा ? जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आवोगे । कहते हैं, और जितने काम तुम कर रहे हो, तुम्हें इस जागने में मददगार नहीं । जागने में कौन मददगार है ? जो खुद जाग उठा है तुमको जगा देगा । समझे ! हम सो रहे हैं, इन्द्रियों के भोगों रसों में । इन्द्रियों घाट से हम थोड़े ऊपर आ जायें तो हमें होश आयेगी, हम देखें कि हम जाग उठे हैं, हमें लगे कि हम अब जाग उठे हैं । अब हमें पता नहीं । सारे महापुरूष कहते हैं कि परमात्मा ज्योतिस्वरूप घट-घट में है । अगर जागें तो उसको देखें कि न देखें । वह तुमको बिठायेगा, थोड़ी देर के लिये अपनी तवज्जों देकर वह तवज्जो जो उस प्रभु ने बख़्शी है, उसकी अपनी तवज्जो नहीं है, क्योंकि वह प्रभु का Mouth-Piece बना है ।

**प्रभ जी बसे साध की रसना।**
**जैसे में आवे खसम की बाणीं। तेसा करी ज्ञान वे लालो॥**

उसमें वह ताकत बैठी है, वह जगा देती है। उसने उसको प्रगट कर लिया है। वह उसका Mouth-Piece बन चुका है। और हमारे अन्तर भी वही शक्ति है, मगर इन्द्रियों के घाट से एक बार कोई हमें ऊपर ले आये, होश जागे, थोड़ा Experience मिल जाये, रोज रोज अभ्यास से हमेशा के लिये जाग उठे। तो कहते हैं, सोई हुई हालत से कैसे जागें।

**मोह माया सबो जग सोया, यह भरम कहो क्यों जाये।**

गुरू अर्जुन साहब फरमाते हैं कि मोह के अन्तर, माया के अन्तर सब सो रहे हैं। माया कहते हैं, भूल का नाम है, अविद्या या जेहल या ग़फलत कहो, सारा जहान ही माया, फैलाव के कारण अन्तर से भूल में जा रहा है, बाहर दुनियां में खचत हो रहा है। कहते हैं इस ग़फलत के कारण इन्सान मोह में फंस रहा है, बाल बच्चों, रूपये पैसे जायदादों के, और और चीजों के। तो इसका नतीजा क्या है ? बार-बार दुनियां में आ रहा है। जो अगर कोई महापुरूष इसको सोई हुई हालत से जगा दे, अन्तर की आंख खुल जाये, प्रभु के देखने वाला बन जाये, उसके महारस को पाकर यह रस अपने आप दिल से उतर जायें, तो फिर जाना आना खत्म हो जायेगा। तो इसका जवाब क्या दिया, कैसे इस सोई हुई हालत से जाग सकते हैं ? तो गुरू अर्जुन साहब फर्माते हैं कि —

**कोई ऐसा सन्त सहज सुख दाता मोहि मारग दे बताई।**

कोई हो। कौन हो ? हिन्दु हो, मुसलमान हो, सिख हो, यह सवाल नहीं। कोई हो। कौन हो ? ऐसा सन्त हो जो सहज की अवस्था के सुख को पा रहा है और हमें दे सकता है। सहज अवस्था किसको कहते हैं ?

**तीन गुणों में सहज न उपजे, मन मुख भरम भुलायन।**
**चौथे पद में सहज है गुरूमुख पल्ले पायन॥**

तीन गुणों में सहज अवस्था नहीं है, त्रिगुणात्मक अण्डे को जिसने फोड़ा है, इससे ऊपर गया है, पिण्ड अण्ड ब्रह्मण्ड के पार, सचमुच वह जाग उठा है, प्रभु के दर्शन पा रहा है। ऐसे पुरूष अगर हमें रस्ते पर डाल दें तो हम भी जाग सकते हैं। तो जागने के

लिये मन इन्द्रियों की गुलामी से ऊपर आने के लिये, किसी ऐसे पुरूष की जरूरत है, जो बन्दी-छोड़ है, जो इन बन्धनों से आज़ाद कर देगा। बड़ी मोटी बात ! जो खुद ही जकड़ों में है, खुद इन्द्रियों के घाट के फैलाव में है, ख्वाहे सारे ग्रन्थों का ज़बानी हाफिज़ भी है। क्या तुमको वह जगा देगा ? सन्तों ने कहा, तुलसी साहब फरमाते हैं —

**चार अठारह नौ पढ़े खट पढ़ खोया मूल।**

चारों वेद, अठारहों पुराण, नौ ब्याकरण, छह शास्त्रों का ज्ञाता हो जाये —

**सुरत सबद चीन्हे बिना ज्यों पन्छी चण्डूल।**

जब तक हमारी सुरत, सुरत नहीं बनती, इस वक्त यह क्या है ? यह जीव बना बैठा है। मन की गुलामी के सबब से सुरत और मन मिलकर यह जीव बन गया। जब तक सुरत मन के आधीन है, मन इन्द्रियों के आधीन है, इन्द्रियों को भोग खैंच रहे हैं, जब तक सुरत मन इन्द्रियों के इन्द्रजाल से ऊपर नहीं आती, इसको अपने आपकी होश नहीं। पहले यह सुरत बने। महापुरूष तुम्हें पहले सुरत बनाता है, फिर परिपूर्ण परमात्मा से जोड़ता है। तभी जुड़ सकोगे। जब तक तुम लिबड़े पड़े हो कैसे जुड़ोगे ? वह परमात्मा परिपूर्ण घट-घट वासी है। आप कहेंगे वह हमें खैंच क्यों नहीं लेता है ? जब सबका जीवन आधार है, सबके घट-घट में है, फिर यह आलायश (मैल) क्यों है ? चुम्बक पत्थर हो, लोहा हो, लोहे को खैंचता है ना ! अगर लोहे पर मिट्टी लगी पड़ी हो तो बेशक पास पड़ा रहे तो भी नहीं खैंचता। अगर मिट्टी उतार दी जाये तो चुम्बक पत्थर खैंचता है। परमात्मा घट-घट में है, सब की सुरत को खैंचने वाली पावर उसमें है, मगर क्योंकि सुरत मन इन्द्रियों के घाट पर जिसम और जिसमानियत का रूप बनी बैठी है इसलिये इसका जीवन आधार होते हुये भी इसको खैंच नहीं सकती है। तो महापुरूष क्या कहते हैं, अरे भई इन आलायशों से हटो, सुरत को शब्द के साथ लगाओ, सारे आलम फ़ाजल बन जाओ। इन सब चीजों का ज्ञान बुद्धि के लिहाज से तुमको मिल जाये, क्या तुम आजाद हो गये ? या जाग उठे ? बल्कि मुआफ करना और सो गये। इसका जागना कब नसीब होता है ? जब इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार हो सकता है, तब यह जाग सकता है। अगर बुद्धि के ही विचारों में रहा तो Reasoning is the help and reasoning the bar. हम अब विचार कर रहे हैं एक बात समझने के लिये। यह तो

ठीक, मगर अभी मिला तो कुछ नहीं ना ! जब तक सुरत मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर न आये, अगर अपने आप आ सकती है तो बड़ी खुशी की बात है। भई अन्धे को दो आंखें चाहिये, जरूर ले लो। अगर ना आ सको तो किसी की मदद ले लो, क्या हर्ज है। दुनियां में क्या नहीं लेते हैं हम ? हर एक काम में मदद ले लेते हैं, जो भी माहिर हैं उनसे। तो कहते हैं कि इस ग़फ़लत की नींद में जो तुम सो रहे हो, अविद्या में, इस जेहल के परदे को उठाना, फाड़ना चाहते हो, तो जिसने फाड़ा है, उसकी मदद ले लो। बात तो यह है। और कोई इलाज नहीं। जो जागा नहीं, वह तुमको कभी नहीं जगा सकता। इसीलिये कहा, कोई भी हो —

**कोई आन मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा। हौं तिस पे आप वेचाई ॥**

कोई हो, यह कोई सवाल नहीं। अगर कबीर साहब हैं तो अच्छी बात, रविदास जी हैं तो अच्छी बात, गुरू नानक साहब हैं तो बहुत अच्छी बात, या और कोई महापुरूष आये हैं। जो जाग उठे हैं मिल जायें, हमें तो उससे जागना चाहिये, इधर से उधर उसके साथ जुड़ना चाहिये। बस। जो जुड़ा है वह जोड़ देगा।

**कोई जन हरि स्यों देवे जोड़।**

कहते हैं किस लिये तुम बय खरीद हो जाओ उसके —

**हरि दर्शन देखन के ताई।**

हमारी ग़र्ज तो उससे प्रभु को पाना है ना। जो मिला दे, उसके सारी उमर गुलाम हैं। तो इस सोई हालत में, जिसमें सब दुनियां जा रही है, पढ़े लिखे, अमीर, गरीब, हाकम मैहकूम, चातुर और सब कोई, उससे जागने का कोई इलाज ? जागे पुरूष की सोहबत। बस। जो जाग उठा है उसके चरणों में जाओ। बस। वह कौन हो ? कोई भी हो ? कोई भी हो ! जो जागता है।

गुरू अर्जुन साहब ने श्री आदि ग्रन्थ, गुरू ग्रन्थ साहब की बानी में सब महापुरूषों की बानी एकत्र की है। रविदास जी चमार की, कबीर साहब जुलाहे की, फरीद साहब मुसलमान की भी। अरे भई कौमों, मजहबों का यहां सवाल नहीं। यहां तो इन्सान, इन्सान का सवाल है। यह जिसम मिला था, Highest rung of Creation, चौरासी लाख जिया जून की सरदार जूनी थी। इसने इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर उसके

दर्शन को पाना था। सारी उम्र इन्द्रियों के घाट ही पर रहा, ख्वाहे नेक रहा, या बद रहा। ''स्वर्ग नर्क फिर फिर औतार।'' छूटा नहीं। अगर यह जीते जी इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ सके, या किसी की मदद लेकर पहुंच सके, उस महा रस को पाकर यह इन्द्रियों के रस फीके पड़ जायेंगे, आना जाना खत्म हो जायेगा। तो इस लिये महापुरूष कहते हैं कि भाई इस सोई हुई ग़फ़लत की नींद से जाग सकते हो, खुद ही सवाल करते हैं, हमारी हालते को अच्छी तरह से जानते हैं कि हम किस हालत में जा रहे हैं। कहते हैं सब दुनियां सो रही है। कहते हैं इस गफलत के ऊपर आना चाहते हो, जागना चाहते हो तो कोई उपाय ? कहते हैं कोई उपाय तुम्हारे मददगार नहीं होंगे अपराविद्या के यह साधन, तुम्हारी उस तरफ जाने के लिये मददगार या ज़मीन की तैयारी जरूर है, मगर जगाने के लिये काबिल नहीं। जगाने वाला तो कोई जागा हुआ ही जगायेगा। याने वह किसी समाज को छेड़ते नहीं, ना तोड़ते हैं, न बनाते हैं। वह कहते हैं जिस समाज में हो, महापुरूषों की बानियां पढ़ों, होश आये तुमको, नेक पाक सदाचारी बनो, तुम्हारी अकल ठिकाने हो, फिर किसी जागते पुरूष की संगत करो। जो जागा है, तुमको जगा देगा । जागना किसको कहते हैं ? इस वक्त हमारी आत्मा, फिर मैं अर्ज कर दूं, मन के आधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर भोगों रसों में लम्पट होकर, जिसम का रूप बनी बैठी है। अपने आपको भूल चुकी है। परमात्मा को भूल चुकी है। एक फकीर ने कहा है।

**हर चे मा करदेम बर खुद हेच नाबीना न करद।**

जो कुछ हमने अपने आपके साथ जुल्म किया है, किसी अन्धे से अन्धे इन्सान ने भी अपने साथ जुल्म नहीं किया। कहते हैं वह क्या जुल्म किया है। कभी विचारा है आपने ?

**गुम करदेम दरीं खाना साहिबे खाना रा।**

इस घर में तुम बस रहे हो, तुम्हारा जीवन आधार बस रहा था, अपने आपको भूल गये, उसको भूल गये। इसलिये जिसम का रूप बन गये।

दो चार अफ़ीमी थे, समझाने के लिये बात है। वह सफ़र कर रहे थे। उनके हाथ में एक ऊंट था, उसको बोता कहते हैं। रात को पहरा देना था कि कोई ऊंट न ले जाये। तो वह अफ़ीमी थे। उन्होंने कहा भई थोड़ी थोड़ी देर सब जागो। उन्होंने क्या किया,

रस्सी को पकड़े रखा। दूसरे को कहा ले भाई, फिर तीसरे को कहो ले भाई। खुमार में हैं। दिन चढ़ा तो बोता गायब था। चोरों ने देखा भई यह तो सो रहे हैं, चलो। उन्होंने नकेल खोल ली, ऊंट को ले गये। कहने लगे (अफ़ीमी) मैंने तुमको पकड़ाया था। वह कहता है मैंने तुमको पकड़ाया था। अरे भई यह हालत हमारी हो रही है। पढ़ते लिखते बिचारते ग्रन्थ पोथियों के हाफिज बनते हुये भी हम अपने आपको भूल रहे हैं। बस। यहीं बोता गायब हो गया हमारा। समझे ! मजनू का जिकर आता है कि एक बार घर से लैला को मिलने गया। कहते हैं कि एक ऊंटनी पर सवार हो गया जिसका एक बच्चा था, घर में छोड़ गई थी। तो मजनू जब ऊंटनी पर सवार हुआ जाते हुये खयाल में, तो ऊंटनी का बच्चा घर था, ऊंटनी घर आ गई। कहते हैं कि घर से चलते हुये छह महीने हो गये मगर लैला तक नहीं पहुंचा। यह बातें समझाने के लिये हैं, हमको मनुष्य जीवन मिलता है इसलिये कि आत्मा प्रभु तक पहुंचे। मगर हम इन्द्रियों के भोगों रसों में इतना मन के आधीन होकर एक आदत बन गई है। मन का खासा है आज जो काम करो, कल करो, दस दिन, महीना, दो महीना करो, फिर बेअखत्यार वह करता है। सूरदास जी ने कहा कि, ''पग आगे आगे जात हैं और मन पीछे पीछे जात।'' तो यह मन पीछे इन्द्रियों के भोगों के साथ लम्पट है। हम पढ़ते भी हैं। देखते भी हैं सब कुछ, फिर यह हालत हमारी हो रही है। तो इससे जागने का कोई इलाज ? जागते पुरूष की सोहबत ! बड़े थोड़े लफ्जों में। और बड़े ज़ोरदार लफ्जों में, ''भई जाग जाग रे तू।'' भई यही गुरू साहिबों ने कहा है।

**जाग लियो रे मना जाग लियो, क्यों ग़ाफल सोया है।**

वह कहते हैं जो तन तेरे साथ है यह भी संग नहीं जायेगा, बाल बच्चे कहां जायेंगे ? रूपये पैसे जायदादें तुम्हारे साथ कहां जायेंगे ? अरे भई होश में आ तू कर क्या रहा है ? सौ सयाने एक ही मत। यहां समाजों का सवाल नहीं है भई, यह मनुष्य जीवन भागों से मिला है इससे फायदा उठाने का सवाल है हर एक समाज में जिसमें रहकर तुमने यह काम कर लिया, वही समाज मुबारिक है। हर एक समाज में महापुरूष आये हैं। इसी चीज़ को पाना था उसी को भूल गये हैं। हम पढ़ना, लिखना, विचारना किस लिये करते हैं ? क्यों ग्रन्थ पोथियां हम पढ़ते हैं, मुआफ करना, कि हमें होश आये कि महापुरूष क्या कहते हैं। बस। वह हमें समझाते हैं, कि अरे भाई तुम सो रहे हो। कहां पर सो रहे हो ? तुम्हारे इस सोने का कारण क्या है ? यह तो उन्होंने बतला दिया,

मगर इससे निकल कर कैसे चलो ? कहते हैं इससे ऊपर चढ़ने का जो सवाल है ना इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना जो है, यहां ऊपर आकर ही तुम जाग सकते हो। यह किसी जागते पुरूष की कहानी है ! बस। नाम उसका कुछ रख लो, भाई कहो, बुजुर्ग कहो, पिता समान कहो, उस्ताद कहो, साधु कहो, सन्त कहो, जो चाहे कहो। उसके बगैर यह गति नहीं मिलती।

**क्या सोवे ग़फलत के मारे, जाग जाग उठ जाग रे।**
**और तेरे कोई काम न आवे गुरू चरणन उठ लाग रे॥**

गुरू अर्जुन साहब ने यही फरमाया बड़े साफ लफ्जों में और सारे महापुरूष यही कहते हैं। फरमाते है —

**भई प्रापत मानुख देह हुरिया। गोबिन्द मिलन की एह तेरी बिरिया॥**
**अवर काज तेरे किते न काम। मिल साध संगत भज केवल नाम॥**

साधु किसको कहते हैं ? जिसने अपनी आत्मा को तन मन के पिंजरे से आज़ाद करके, प्रभु का जो Mouth-Piece (मुख) बना है, उसका नाम साधु है। वह जुड़ा है, तुमको जोड़ देगा। वह जागा है, तुमको जगा देगा। उसकी आंख खुली है, तुम्हारी आंख खोल देगा। तुम देखने वाले बन जाओगे।

**सत्गुरू मिले तां अखी वेखे।**
**उत्तम चोला बड़ा अमोला, लगत दाग़ पर दाग़ रे।**

कहते हैं, यह मनुष्य जीवन का जो चोला मिला था यह बड़ा उत्तम था। देवी देवते भी इसको पाने के लिये, इसको लोच रहे हैं।

**जिस देही को सिमरे देव, सो देही भज हर की सेव।**

समझे ! कहते हैं यह उत्तम चोला तुमको मिला था प्रभु के पाने को। अब प्रभु को पाना है तो भई कुछ साफ़ सुथरे होकर जाओ। कहते हैं इस चोले को साफ़ सुथरा रखना था। पैदा होता है तो कितना Immaculate (निर्मल) होता है, बिलकुल निरदोष ! बच्चा जब पैदा होता है उसमें कोई औगुण नहीं होता है। सोहबत संगत से पिछले संस्कार जब उभर आते हैं, जैसी सोसायटी वैसा रंग ले लेता है। अरे भई इस चोले को साफ़ सुथरा रखना था, अगर आपके कपड़े बड़े मैले बदबूदार हों, कोई तुम्हें

अपने पास बैठने देगा ? हरगिज नहीं ! नफ़रत करेगा। अगर साफ़ सुथरे हो तो आवो जी, बैठो। तो उस प्रभु के पाने के लिये कहो, यह देह रूपी जो कपड़ा है, इसको साफ़ सुथरा रखो। अन्तर से भी, और बाहर से भी। बाहर से क्या है। Cleanliness is next to Godliness. हरि मन्दिर है। बाहर के हरि मन्दिर कितने साफ़ सुथरा रखते हो ! वह इस नमूने पर बनाये थे। अरे भई उसको तो तुम साफ़ सुथरे रखते हो, इस जिसम को, यह गन्दा क्यों है ? यह तो हुई बाहर की सफ़ाई, और अन्तर की गलाजत है, काम, क्रोध, ईर्षा, मोह, दुनियां की मोहब्बतें, दुनियां की Attachments (मोह) दुनियां की जो आलायशें हैं, सब भरी पड़ी हैं। जिस मन्दिर में इतनी गन्दगी है, वहां प्रभु कैसे आयेगा ? इसलिये कहा क्राईस्ट ने Blessed are the pure in heart for they shall see God. वह हृदय मुबारिक है जो पाक और पवित्र है क्योंकि ऐसे पाक पवित्र हृदय वाले ही प्रभु को पा सकते हैं, देख सकते हैं।

तो सदाचारी, नेक पाक जीवन, यह पहला कदम है प्रभु के पाने का। हम इस तरफ तवज्जो नहीं देते हैं। गन्दगी का ढेर लगा हो, उस पर रेशमी कपड़ा डाल दो, क्या उससे खुशबू आयेगी ? बदबू ही आयेगी। बर्फ का ढेर लगा हो, उस पर काला कम्बल भी डाल दो, तो भी ठंडक आयेगी। तो इसे शरीर रूपी मकान कहो, कपड़ा कहो, जिसमें रह रहे हो, इसको साफ़ और सुथरा रखो। साफ़ सुथरा किसको कहते हैं ? सवाल यह आता है। तुलसी साहब ने इसका जवाब दिया है —

**दिल का हुजरा साफ कर, जानां के आने के लिये।**
**ध्यान गैंरों का उठा उसके बिठाने के लिये ॥**

बस। उसके सिवाय जितने और ख्याल है, सब नफी कर दो। यही सफाई है। न जिस्म का रहे, न इन्द्रियों के भोगों रसों का रहे, न दोस्तों का रहे, न मित्रों का न दुश्मनों का, न मैं मैं, न तू तू, न किसी का। सिर्फ उसी का, एक का ख्याल प्रबल बस जाये। उसकी जगह कोई और ख्याल पर न मार सके, इसी का नाम सफाई है। हमारे लोगों की क्या गति है ? गुरू नानक साहब आये, फरमाने लगे —

**जे रत लगे कपड़ा जामा होय पलीत। जो रत पीवें मानसां तिन क्यो निर्मल चीत ॥**

कपड़े को खून लग जाये, हम कहते हैं यह पलीत हो गया है। अरे भई जो लोगों का खून निचुड़ा हुआ पी रहे हैं, जाहिरदारी या दर परदा चालाकी चतुराई से, अरे भई

उनके हृदय कैसे निर्मल होंगे ? फिर क्या ताकीद करते हैं ?

**नानक नांव खुदाय का दिल अच्छे मुख लेहो ।**

कि अगर प्रभु का नाम लेना है उस तरफ जाने का तो दिल को साफ़ करके लो ।

**अवर दिवाजे दुनि के झुठे अमल करेओ ॥**

दुनियां के लोग झूठे अमलों में लग रहे हैं । दिल की सफाई नहीं है । कौन आयेगा मैले हृदय में ?

**एक दिल में लाखों तमन्ना ।**
**उस पे और ज्यादा हवस फिर ठिकाना है कहां उसके बिठाने के लिये ॥**

एक दिल है, लाखों तमन्ना उसमें बस रही हैं, दिनों दिन बढ़ती हुई हवस, फिर बताओ वहां उसको बिठाने की जगह ही कहां है ? कई फ़कीरों ने तो यह कहा है कि यह जाने दो, प्रभु का नाम लेने से पहले जिन्होंने प्रभु के नाम को पाया है, उनका नाम लेते हुये पहले मुंह को हज़ार बार गुलाब से धो लो, याने इस जबान से भी न लो, उन पुरूषों का नाम भी तब लो जो नाम के रसिये बने हैं, जब तक जबान को हजार बार न धो लो । कितनी भारी पवित्रता है । गुरू नानक साहब ने तो बड़े वाजेह तौर से (स्पष्ट) कहा है कि —

**एह तन माया पाया प्यारे लीतडा लब रंगाये ।**

यह तन माया में पड़ा है, भूल में हम जा रहे हैं । माया भूल का नाम है । यह कहां से शुरू होती है ? ''एह शरीर मूल है माया ।'' शरीर से ! हम तन धारी हैं, तन का रूप बन गये । यहीं से सारा Angle of Vision (दृष्टिकोण) बदल गया, देखने का, ''लीतड़ा लब रंगाये ।'' इसको लबों लालचों, इन्द्रियों के भागों रसों से रंग रखा है । फिर कहते हैं ।

**मेरे कन्त ना भावै चोलड़ा प्यारे किम धन सेजे जाय ।**

कहते हैं उस प्रभु को ऐसी रूह कहते हैं जिसने ऐसा चोला पहन रखा है, नहीं भाती है । फिर ? ऐसी रूह गिलाजत से भरी हुई, प्रभु की गोद में कैसे जा सकती है ? कितने साफ लफ्ज हैं । उन्होंने ही नहीं, सब महापुरूषों ने यही कहा है —

Ethical Life is stepping stone to spirituality. सदाचारी, नेक पाक जीवन

प्रभु को पाने का पहला कदम है। यम, नियम के आसन इसीलिये बनाये गये हैं। सब महापुरूषों ने यही कहा है। हम इस तरफ तवज्जों नहीं देते। मुआफ करना, गन्दगी का ढेर लगा हो ऊपर से अतर की बूंदे गिरा दो तो क्या हुआ। भाई गन्दगी को साफ करो। अगर हवा भी गन्दगी से साफ़ है, तो बड़ी मुअत्तर होगी। अरे भई उस को अगर फूलों की खुशबू से रंग दो तो क्या कहना ! तो कबीर साहब कहते हैं कि ऐ भाई तूने जागना था, जागने के लिये क्या जरूरी है, कि इन्द्रियों के भोगों रसों से हटो। हम इस तरफ तवज्जों नहीं देते सच्ची बात है। कोई महापुरूष मिल भी जाये, तुमको जगा भी दे, इन्द्रियों के घाट से ऊपर भी लाये, थोड़ी आंख खोल भी दे फिर भी हम इन्द्रियों के भोगों-रसों में इतने लम्पट हैं कि इधर से उधर टाईम देने को तैयार नहीं तो क्या होगा ? हमारे हजूर फरमाया करते थे, जो जीते जी पढ़ा हुआ नहीं है, वह मर कर भी अनपढ़ रहेगा। कोई पण्डित थोड़ा बन जायेगा ? मैं इस मकान से बाहर निकल गया, मैं तो वही हूं जैसा अब हूं। निकलने से महात्मा नहीं बन जाता याद रखो। जैसा बना है वह रहेगा। तो बात समझ रहे हैं आप भाई, महापुरूष क्या कहते हैं ? किसी समाज में रहो अपने जीवन की तरफ़आप नजर मारो, आप क्या बने हो।

**उत्तम चोला खरा अमोला लगत दाग पर दाग रे।**
**दो दिन की गुजरान जगत में जरत मोह को आग रे॥**

देखो भई कहते हैं दुनियां की जिन्दगी दो दिन की है। आखर जाना है। अरे भई किस लिये तुम दुनियां की मोह और तृषना की आग में जल रहे हो ? इससे फायदा उठाओ। दो दिन की जिन्दगानी अच्छी करने से हमेशा से सुख को पा जाओ, प्रभु की गोद में चले जाओ, जन्म मरण आजाद हो जाये, खत्म हो जाये। क्या यह अच्छा नहीं ? इन्द्रियों के भोग रस तो कई बार भोगे, कई जन्मों में। अरे भई ज्यादा तो जन्म से अब तक तो भोग लिये हैं ना, अब भी बाज आ जाओ, खड़े हो जाओ कहीं। जो बेड़ी का सामान बह गया बह गया, जो बच गया उसी को बचा लो। महापुरूष जब मिलते हैं, वह यह नहीं कहते कि भई तूने पीछे क्या किया ? वह कहते हैं Do no more. खड़े हो जाओ। बस। आगे मत करो। जो दो दिन बचें हैं, उसी से फायदा उठा लो। महापुरूष कहते हैं गिर गिरकर इन्सान सवार होता है। ठीक है। हमारी हालत ऐसी है। जगाने वाले की मेहरबानी है कि सोये हुये को भी जगा दे। अगर जगा दे तो फिर उसके हुक्म के

अन्तर रहे। जब सत्गुरू के घर जन्म ले तो उसका जो वचन है वही उसके लिये शास्त्र, वही उसके लिये बाईबल, वही कुरान बन जाये, तब तो बन जायेगा काम। अगर फिर भी अपने मन को बीच में दखल देता है, तो अपने पांव को आप कुल्हाड़ी मारता है, देर करता है, अपने मनुष्य जीवन में आदर्श को पाने में। जन्म बरबाद चला जाता है। फिर क्या रह जाता है ? तो महापुरूषों ने जीवन मुक्त को माना है। मर के मुक्ति हुई इस बात पर एतबार न करो।

**मोयां होयां जो मुक्ति देवोगे, तो मुक्ति ना जांनू कोयला ॥**

फर्ज करो मरकर तुम बादशाह हो, मगर अब तो भूखे मर रहे हो कि नहीं। मुक्ति वही जो अब ही तुमको मिले। अब आपको शान्ति हो। दोनों हाथ लड्डू रहे। इसलिये कहा —

**सन्त जनां मिल भाईयो सच्चा नाम संभाल।**

फिर क्या होता है ?

**तोशा बान्धो जिया का एथे ओथे नाल ॥**

अगर हमको जाना याद रहे तो काम बन जाये।

**जिन्नी चल्लन जानिया सो क्यों करे बिथार।**

हमें मरना भूल गया। जीना झूठ और मरना था सच। जीना सच हो गया। मरने का ख्याल ही नहीं। अगर यह पता हो कि कल हमने निकल जाना है तो आज के दिन क्या करोगे ? एक महापुरूष ने कहा है कि हर एक दिन को ऐसा समझो कि जैसे यह तुम्हारा आज आखिरी दिन दुनियां में है।

**नींद निशानी मौत की उठ कबीरा जाग। जां के संग ते बीछड़ा तांही के संग लाग ॥**

कुरान शरीफ़ में भी यही आता है कि नींद मौत की छोटी बहन है। समझे ! सोये सोये न जागो ना जागो। कई सोते ही सो जाते हैं। फिर ! क्या भरोसा है ? तो नींद रोज सोवो, उसकी गोद में चले जाओ। छुट्टी कर जाओ सब दुनियां को। सुबह उठेंगे फिर नये सिर से दुनियां। हमें मौत भूल गई मुआफ करना !

**दात प्यारी बिसरिया दातारा। जाने नहीं मन बीचारा।**

दातें तो प्यारी हो गई, मगर दातार भूल गया। दातों का शुकराना करो, और के लिये

उम्मीद करो। सबसे बड़ी दात प्रभु को पाना, उसकी नजदीकी, जन्म मरण से रिहाई है, इसके लिये प्रार्थना करो। जिसकी सच्चे दिल की पुकार है, वह सुनता है। क्या करता है ? कोई जागता पुरूष मिला देगा। वह उसको सोई हालत से जगा देगा। बस।

**तन सराय में जीव मुसाफ़िर, करता बहुत दीमाग रे ॥**

कहते हैं तन रूपी सराय है। तुम इसमें चन्द रोज़ा रहने वाले हो। अरे किस बात पर इतना दिमाग कर रहे हो ? अकड़-अकड़ कर फिरते हो ? यह सराय तुम्हारी नहीं है। सराय होती है एक दिन रहे, आखर जाना ही पड़ेगा। शाम को आये सुबह को उठकर चल दिये। तो इसको अगर सराय समझा जाये तो फिर क्यों भई कैसे होना चाहिये ? तो फिर किस बात का मान हो सकता है ? किस बात की बड़ाई और शेखी हो सकती है ? ग़नीमत समझो आपको यह सराय में रहना नसीब हुआ है। इसमें तुम उसको पा सकते हो। तुम मुसाफिर, जीव हो। यह तन रूपी, मोटल होता है ना अमेरिका में, एक होटल होते हैं, एक मोटल होते हैं। मोटल में क्या है कि जब सफ़र लम्बे हों ना, होटल तो शहरों में होते हैं, मोटल होते हैं रस्तों पर। रस्ते में जाते जाते मुसाफिर को जब बहुत देर हो जाये, या कोई कारण हो जाये, तो एक मोटल होता है जिसमें सोने का इन्तेजाम, खाने का भी है, सब कुछ है। वहां रात ठहरे, सुबह चल पड़े अपने सफर को। तो यह मनुष्य जीवन एक मोटल है कहो, हमेशा रहने की जगह नहीं, कब तक रहोगे ? अगर दो चार दस दिन वहां पर अपना कब्जा जमाओगे तो मालिक मकान आपको पता है कि डिग्री करा लेगा। निकाल देगा। निकल यहां से। यह हमेशा रहने की जगह नहीं। यही बात अगर समझ में आ जाये तो हमारा जीवन पलटा खा जाये। सच्ची बात। यही बात हम भूल गये, मूल की बात ही भूल गये, यह जिसम चन्द-रोज़ा था। यह भूल कहां से शुरू होती है ? शरीर से ! ''यह शरीर मूल है माया।'' समझे !

**तन सराय में जीव मुसाफिर करता बहुत दिमाग रे।**
**रैन बसेरा करले डेरा चलना सबेरा ताक रे ॥**

सवेरे जाना है भई। यह रात को जो सराय में रहे सबेरे इतने बजे उठके जाना है। कभी यह ख्याल आया ? जाना तो सबने है ना, कभी यह ख्याल आया है कि कहां जाना है ? किसने जाना है ? भूल गया ना जाना, इसलिये सब मस्त हो रहे हैं, और क्या है। जिसको सफ़र याद है वह नींद सो नहीं सकता है। वह तैयारी में लगता है कि

सुबह मैं उठते चल पड़ूं, अपने मन्जिल रस्ते पर चल पड़ूं। सुबह का चलना याद है, इन्तजार है मैंने सुबह चलना है इतने बजे, जल्दी करो भई। बड़ी साधारण मिसाल से हमारे दिल दिमाग में बिठाना चाहते हैं कि असल हकीकत क्या है, हम किस बड़ी भारी भूल में जा रहे हैं ? जो इस भूल से निकला है वही निकालेगा। हजार हम ग्रन्थ पोथियां पढ़ते हैं मुआफ करना, सत्संग भी सुनते हैं, होश नहीं। कैसे होश आये ? जब तक कोई महात्मा इन्द्रियों के घाट से, बैठाकर ऊपर न लाये, जगाये नहीं, अब सत्संग की बातें सुन रहे हो, यह जागने की बातें हैं, जागना नहीं। जागना कब होगा ? जब किसी महात्मा के पास बैठोगे, वह बिठायेगा, तवज्जो देगा, तुम इन्द्रियों के घाट से ऊपर आवोगे जिस्म बेहिस हो जायेगा, अन्तर की आंख खुलेगी, ज्योति का विकास होगा, तब जागना होगा, जब रस्ते चले, यह है जागना। अब बातें सुनकर होश आ रही है कि भई बात क्या थी कर क्या रहे हैं। फिर भी जागने के लिये जाओ किसी जागते पुरूष के पास। जागते पुरूष से एक बात सुनोगे कुछ बड़ी साफ Clear-cut होगी। उस चीज में Conviction (विश्वास) होगी, भई बात तो बड़ी साफ कहता है, कुछ शकी मामला नहीं है, सब महापुरूष यही कहते हैं, चलो भई देख तो लें। जाओ तो सही किसी महात्मा के पास ! अगर वह जगा दे, कुछ अन्तर की आंख खोल दे, जिस्म बेहिस (निश्चेत) हो जाये, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाये। थोड़ा सा भी तजरूबा जागने का हो, फिर दिनों-दिन बढ़ा लो। वह तुम्हें कोई लोहे की मुहर Iron stamp, तो नहीं लगा देता। वह कहता है, जिन समाजों में हो लगे रहो। सिर्फ इन्द्रियों के घाट से ऊपर आने का सवाल है। समाजों का ताल्लुक जिस्म से है। तुम जिसम से ऊपर आओ। ऊपर आने के लिये, वह तुम्हें तजरूबा दे दे तो क्या अच्छी बात है ! इसका नाम है जागना।

**यह संसार विषय रस माते देखो समझ बिचार रे।**

ज़रा कहते हैं, विवेक से काम लो भई। इन भोगों रसों में जो लम्पट हो रहे हो, यह कब तक रहेंगे ? तुम्हारा ताल्लुक इस जिस्म के साथ कब तक है ? आखर क्या हशर होगा ? विवेक से काम लो, होश में आओ, थोड़ा विचार से काम लो। विवेक के बगैर दुनियां बह रही है। समझे !

चार किसम के पशु कबीर साहब ने फरमाये हैं। ''गुरू पशु, नर पशु, तिरिया पशु, वेद पशु संसार।'' कहते हैं, जहां कोई विवेक नहीं है, सब बहे चले जाते हैं। गुरू होते

हुये भी पशु वृत्ति में बहे चले जाते हैं। गुरू पशु किसको कहते हैं ? हमारा गुरू तो गुरू है, बाकी सब चोर हैं। दूसरे को गालियां निकालते हैं। अरे भई जो जाग उठे वह सब जाग उठे, किसी जमाने में आये। यह बड़ी भारी भूल है जिसमें सब हैं। जब महापुरूष चला जाता है ना, पीछे अपनी कमाई वाले पुरूष तो कभी यह बातें नहीं करते, समझे। वह हकीकत को उसी तरह पेश करते जाते हैं जैसे वह बयान किया है। जब वह चले जाते हैं, रहती नहीं चीज़, चीज़ कहीं और निकल गई, वह उसको कायम रखना चाहते हैं, उसके सौ झूठ कर-कराके उसको बान्धना चाहता है, फ़लाना ऐसा, फ़लाना ऐसा। भई बताओ जो महापुरूष प्रभु की कदर करता है, जो प्रभु की तरफ जाते हैं उनका कभी बुरा भी चितवन करता है ? आज सबसे बड़ा हथियार क्या है ? दूसरों की निन्दा करना, दूसरों को बुरा भला कहना। भई यह कहां की अकलमन्दी है। सन्तों के दरबार में तो यह बातें भूल जाती हैं।

**बिसर गई सब तात पराई। जबते संगत मोहि पाई॥**
**ना कोई बैरी नाहीं बिगाना। सकल संग हमरी बन आई॥**

यह है। जिनको अनुभवी पुरूषों की मोहब्बत थोड़ी भी मिली है, वह पहले जाग उठते हैं। जिनको नहीं मिली है, आलिम हो, फाजिल हो, वह बहे चले जायेंगे, और क्या होगा ! तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐ इन्सान देख तू क्या कर रहा है ? तू विचार से काम ले। यही गुरू अर्जुन साहब ने फरमाया है।

**हार परियो स्वामी के द्वारे दीजियो बुद्धि विवेका।**

विवेक के बगैर, Discrimination कहो, विवेक कहो, सत् और असत् का निर्णय कहो, जब तक यह न हो, निकलना बड़ा मुश्किल है। अनुभवी पुरूष के पास सत्य और असत्य का निर्णय होता है, वह सत्य को पेश करता है। कौन सी चीज़ सत्य है, सवाल यह आ सकता है। महापुरूष क्या कहते हैं।

**साधो, इह तन मिथ्या जानो। या भीतर जो राम बसत है, साचा ताहि पहचानो।**

यह तन मिथ्या है, बदल रहा है, यह सत् नहीं है, असत्य है। जगत सारा ही बदल रहा है। इसमें सत्य वस्तु केवल परमात्मा है, या आत्मा उसकी अन्श है, बस। बाकी सब असत्य है। यह विवेक कहता है। और जो असत्य ही में लगे रहे, सत्य से मुंह मोड़

लें, तो वह आते जाते रहेंगे। गुरू अर्जुन साहब ने फरमाया है एक जगह —

**नदरी आवे ता सों मोह।**

कि हे प्रभु ! जो कुछ हमको नज़र आ रहा है इससे हमारा मोह बन्धा पड़ा है।

**इब क्यों मिलिये प्रभु अविनाशी तोहि ॥**

कि यह सब नाशवान चीज़ें हैं। हे प्रभु ! तू अविनाशी पुरूष है। जो नाशवान चीज़ों में लग रहे हैं, असत में, वह तुझे कैसे पा सकते हैं ? तो विवेक से काम लो भई। विवेक से होश आयेगी। महापुरूष तुमको सत् चीज़ पेश करता है, असत्य से मुंह मोड़ता है। और यही वेदों में प्रार्थना आई है कि हे प्रभु ! हमको असत्य से सत्य की तरफ ले चल। हम सब असत्य के पुजारी हैं। असत्य का रूप बन रहे हैं। दुनियां ही हमारा दीन, दुनियां ही हमारा आदर्श। लाखों करोड़ों जमा कर गये, यहां के यहीं रह गये। बस। साथ क्या जायेगा ? वह तो सामान ही नहीं किया है। वह ''सच्चा नाम सम्भाल।'' समझे !

**हरजियो तेरे नाल है गुरू मति रंग माण।**

किसी अनुभवी पुरूष की मति को लो, उसके रंग, नशे को पा लो। वह तुम्हारे अन्तर में है, कहां पर है ?

**अदृष्ट अगोचर नाम अपारा। अति रस मीठा नाम प्यारा ॥**

जब तक बाहर से हटोगे नहीं, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आते नहीं, यह दौलत तुममें है, सुखों का समुन्दर ठाठें मार रहा है, अफसोस तुम उससे खाली रह गये हो। कोई महापुरूष तुम्हें मिलेगा, उसके साथ जोड़ेगा, इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर होश में लायेगा, जगा देगा। उसकी कमाई करो, तुम्हारा जीवन सफल है। किसी समाज में रहो, समाजें सब अच्छी हैं, मैं अर्ज कर रहा हूं। बड़े Noble Purpose से बनाई गई हैं। मगर जब तक कमाई वाले लोग रहे, सुख को पाते रहे। जब कमाई वाले लोग न रहे, बस एक दूसरे का, भाई भाई के, प्याले जुदा हो गये। बात तो यही है।

**''मन भंवरा तज बिख को चलो बेगम के बाग रे।''**

कहते हैं, मन भंवरा बना पड़ा है, विषय विकारों में भीं-भीं कर रहा है। जैसे

गुबरीला होता है ना, गन्दगी पर ही आवाज, रट, लगाता है। अरे भई मन भंवरा इन्द्रियों के भोगों-रसों पर ही रट लगाता है। कहते हैं यह छोड़ दो —

**तेरे अन्तर बेगमपुरा शहर को नाँव।**

एक ऐसा देश है जो बेगमपुरा है। वहां कोई ग़म नहीं। कोई ख़िराज (कर) नहीं, टैक्स नहीं, कोई ग़मी नहीं, कोई धड़ेबन्दी नहीं, वहां आनंद ही आनंद है। चलो उस देश को, बेग़मपुरा शहर को नांव, महापुरूषों ने कहा है। वह तुम्हारे अन्तर है। कब मिलेगा ? जब बाहर की लज्जत तुम छोड़ोगे। बस। संयम का जीवन हो। महापुरूष यह नहीं कहते कि घर-बार छोड़कर जंगलों की राह लो। मगर वह यह भी नहीं कहते कि इन में खचित होकर यहीं मर जाओ। उसका नतीजा क्या होगा ?

**जहां आसा तहां वासा।**

दुनियां की हवस दिल में बस रही है, दुनियां की लज्जतें , दुनियां की यह वह हैं, तो कहां जाओगे ? जहां की हवस है। अगर जीते जी इससे ऊपर, उस बेग़मपुरा की झलक मिल जाये, फिर क्यों आना जाना होगा ?

**जब ओह रस आवा तो एह रस नहीं भावा।**

अपने आप खत्म हो जायेंगे। याने मनुष्य जीवन एक अजीबो ग़रीब मशीन है कहो। अगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर चढ़ गये तो बेड़ा पार हो गया। अगर इन्द्रियों के ही घाट पर रहे, नेक रहे या बद रहे, आना-जाना बना रहेगा। बड़ी साफ बात ! इन्द्रियों के घाट पर हम इस फैलाव के कारण अन्तर से सो रहे हैं। अगर इससे ऊपर आकर जाग उठे, तो काम बन जाये। और जगाने वाला कौन हो ? पढ़ने लिखने से जाग सकते नहीं। समझे ! यहां तो मन को खड़ा करना पड़ेगा भई। समझे ! तो एक महापुरूष ने कहा कि —

**लिखना पढ़ना चातुरी यह तो बात सहल।**

लिखना, पढ़ना, चातुरी की बातें बनाना, लेक्चर देना, कथा करना, ज्ञान करना, कहते हैं, यह तो आसान है। कोई भाई ट्रेनिंग करे साल दो साल में कर लेगा। मगर क्या कहते हैं, मुश्किल कौन सी बात है ? कहते हैं।

**गगन चढ़न, मन वशीकरन, यही बात मुश्किल।**

कहते हैं पिण्ड को छोड़ कर ऊपर चढ़ना, मन को काबू में करना और ब्रह्मचर्य की रक्षा करना, यही बात मुश्किल है। इनके बगैर काम नहीं बनता है। दो ही चीजों ने हमको दुनियां में फंसा रखा है। ग़ौर से सुनिये।

हजरत मुहम्मद साहब से पूछा गया कि महाराज आप किसकी हामी भरोगे ? कहने लगे भई ऐसा पुरूष जिसने दो उजबों को काबू किया है। पहला उजब दो होंटो के दर्मियान है, ज़बान, लज्जतें, यह वह, और दूसरा जो दो रानों के दर्मियान है। अगर इसको काबू कर ले तो मैं खुदा की दरगाह में तुम्हारा ज़ामन (ज़मानती) होऊंगा। कितनी साफ़गोई है। और यही दो हैं, मुआफ करना जो मन के बड़े कमान्डर हैं। लज्जतें और भोग। बस। इनके न मिलने से क्रोध है ! क्रोध और क्या है ? जहां रूकावटें हुईं वहां क्रोध ! क्रोध कोई चीज़ नहीं है। कामना में रूकावट होने का नाम क्रोध है। जब क्रोध होता है तो कहता है मैंने जरूर पाना है। जब मिल जाता है तो खूब गले लगकर हमेशा को फिर उसको छोड़ना नहीं चाहता है। बस। यही असल चीज़ है। कामना विहीन हो जाओ, दसवें गुरू साहब ने फ़रमाया है। Be desireless ! महात्मा बुद्ध ने कहा है। सारी बुनियाद कहां से शुरू होती है ? अरे भई जिसम रूपी मकान में रहकर अगर ऊपर चढ़ गये, जाग उठे, काम बन गया। जागना कैसे होगा ? कोई जागता हुआ पुरूष तुमको जगायेगा। इल्म, आलिम, कथा, ज्ञान, लेक्चर कोई भाई भी दे देगा। जो आमिल है उसकी ज़बान में Clarity सफाई, बड़ी दिल को Appeal करेगी बात, ठीक सही, मालूम होती है। क्योंकि वह देखकर कह रहा है। जो पढ़े लिखे हैं, खाली बयान करते हैं। उनकी जबान में वह सफाई नहीं है। कबीर साहब सर्बाजित पण्डित से मिले तो कहने लगे।

**मेरा तेरा मनुबा कैसे इक होई रे।**

ऐ पण्डित तेरा और मेरा मन कैसे मुत्तफिक हो सकते हैं।

**मैं कहता हूं आंखन देखी। तू कहता काग़त की लेखी॥**

तो अनुभवी पुरूष के पास, महापुरूषों की बाणी का ठीक Import (अर्थ) भी मिलेगा, सही मायने भी समझ आयेंगे। मगर अभी भी जागना बाकी है। जागना तभी होगा, जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आयेंगे। अपने आप जा सकते हो तो बड़ी

खुशी की बात है। मगर जाना नामुमकिन के बराबर है। उसका कारण कि हम इन्द्रियों के घाट का रूप बने बैठे हैं। जितने साधन हैं उनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। जो आगे ही इन्द्रियों के घाट का रूप बने बैठे हैं, साधन वह करते हैं जिनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है, अरे भई वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर कैसे जायेंगे ? कई दफा पिछले संस्कारों के सबब से थोड़ी बहुत अन्तर ज्योति का विकास आ भी जाता है, मगर आगे पता नहीं क्या करें। वह कभी आ गया कभी न आया।

तो किसी अनुभवी पुरूष के पास बैठो, वह तुमको जगा देगा, बैठाकर Experience देगा। इसमें उसकी बड़ाई है। जिसके पास यह दौलत नहीं है, आलिम है या फाज़ल है, बड़ा Propagandist है, यह बड़ा सारा Paid प्रचार उसका हो रहा है, जैसे दुनियां में आज हो रहा है, कोई नई बात नहीं है, क्या वह तुम को जगा देगा ? नहीं ! गुरू बाणी में बड़ा साफ़ आया है।

**जिसदा साहिब भुखा नंगा होवे, तिसदा नफ़र कित्थों रज्ज खाये।**

बड़ी साफ़ बात कही है। अगर वह देखते हैं, किसी महापुरूष के पास गये, यह चीज़ नहीं, जाग नहीं पड़े, फिर भी अन्धाधुन्ध लगे पड़े हैं, कहते हैं वह भी अन्धा है।

**अन्धे के राह दसिये अन्धा होय सो जाये।**

देखते हो कि उसको कुछ नहीं मिला और तुमको कुछ मिला नहीं। जब तक अपनी आंखों से ने देख लो यकीन कहां से आता है ?

**जब लग न देखूँ अपनी नैनी। तब लग न पतीजूँ गुरू की बैनी॥**

थोड़ी चीज़ भी मिले तो हां ठीक है। मिली ही नहीं, तो भी अन्धाधुन्ध लगा पड़ा है, कहते हैं फिर वह भी अन्धा है।

**होय सुजाखा नानका तां क्यों उज्जड़ पाये।**

जो आंख वाला हो, तो वह क्यों जीवन बरबाद कर रहा है ! मनुष्य जीवन हाथों में गुज़रा जा रहा है। जहां से यह चीज़ मिले, जाओ ले लो। एक से मिले, दस जगह मिले, बड़ी खुशी की बात है। हम सच के पुजारी हैं। जन्म को सफल बनाना है। हम समाजों में दाखिल हुए थे प्रभु के पुजारी बनने के लिए, न कि समाजों के पुजारी बनने

के लिए। रहो समाजों में, मगर समाजों में रहकर इतने ऊँचे चढ़ जाओ कि —

**मानुष की जात सब एके पहिचानिबो।**

यह आदर्श है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं —

**यह संसार विषय रस माते देखो समझ बिचार रे।**

Right understanding कब आती है ? सही नज़री कब आयेगी ? जब किसी सही नज़री वाले के पास बैठोगे। जो आप ही गलत नज़री पर है, वह तुम्हें कैसे सही नज़री देगा ? अनुभवी पुरूषों की यह बाणियां हैं। यह सही नज़री से हैं। जिसकी अपनी ही सही नज़री नहीं, वह आपको यह मायने कैसे बतायेंगे ? वह एक-एक तुक के पांच पांच तो अर्थ कर देंगे, मगर सही कौन है, यह पता नहीं। जो देख के कहता है, वह कहता है, यह मैंने देखा है भई, बैठ जाओ।

**मन भौंरा तज बिख के बन को, चलो बेगम के बाग रे।**

हमारा असली घर तो वही है ना !

**केंचुली कर्म लगाई चित्त में, हुआ मनुष ते नाग रे !**

यह इन्सान था, इसे हन्स का पुतला होना चाहिये, प्रेम का पुतला। परमात्मा प्रेम है। यह उसकी अंश है। यह भी प्रेम का स्वरूप है। इसने प्रेम का पुतला बनना था। यह नाग बन रहा है। नाग का कायदा आपको पता है, जब किसी को डसता, डंक मारता है ना, तो एक तो वह जगह जलने लगती है। और दूसरे दर्द करती है। ज़बान से डसता है। अरे इन्सान जबान से डसता है। जबान का डसा हुआ कभी ठीक नहीं होता है याद रखो। तलवार का जख़्म तो हफ्ते दस दिन में ठीक हो जायेगा, अरे जबान का ज़खम जब याद करो वह नये ताज़े हो ताजा है। हिन्दोस्तान की सभ्यता नाश हो गई महाभारत का युद्ध हुआ। कहां से शुरू हुआ ? ज़बान के डसने से। कौरवों के लड़के द्रौपदी के महल में जा रहे थे। आगे फ़र्श ऐसा बना था, दूर से ऐसा मालूम होता था जैसा कि पानी लहरें मारता है। उन्होंने बिचारों ने अपने पाजामें ऊपर खैंचे तो द्रौपदी ने हंसकर कहा, कि अन्धों की औलाद अन्धी होती है। कौरव थे ना। बस यह बुनियाद थी सारे महाभारत के युद्ध की। अरे भई घर घर में जाकर देखो क्या झगड़े हैं। सब इसी ज़बान से डसे हुये। समाजों-समाजों में किस बात के झगड़े हैं ? इसी

बात के। मुल्कों-मुल्कों और कौमों-कौमों में किस बात के झगड़े हैं भई ? इसी बात के। समझे ! देखने वाली बात है, खुले दिल से बिचारो। एक प्रेम करना सीख जाओ, काम बन जाये। दुनियाँ में भी सुख, एक प्रेम की चुटकी डाल दो, घर में डाल दो, घर में सुख, समाजों में डाल दो समाजों में सुख, मुल्कों में डालो मुल्कों में सुख, एक प्रेम के न होने के कारण सब झगड़े पड़े हैं। समझे ! यहां तक कहा गया, परमात्मा प्रेम है, आत्मा उसकी अंश है, यह भी प्रेम स्वरूप है और प्रभु के पाने का ज़रिया भी प्रेम ही है। दसवें गुरू साहब ने बड़े साफ़ लफ्ज़ों में फर्माया है, सब भेखों का जिकर करते हुए फर्माने लगे —

**साच कहूँ सुन लियो सबे। जिन प्रेम कियो तिनही प्रभु पायो॥**

ऐ भाइयो, सबका भेखों का जिकर किया पहले, कहने लगे किसी समाज में रहो सच्ची बात यही है कि जिन्होंने प्रेम किया, उन्होंने ही प्रभु को पाया, ख्वाहे किसी समाज में रहे। जितनी हम पूजा पाठ, यह वह करते हैं, किसलिये करते हैं ? हमारे दिल में प्रभु के लिये लगन लगे। अगर वह लगन नहीं लगी, उसके लिये हमारी आंखों से दो आंसू नहीं बहे, अरे भई किस काम के हैं यह सब पूजा पाठ ? पूजा पाठ यह वह, इसीलिये कि यह करते हुए हमारे दिल में उसको पाने की तड़प, शौक, विरह, सोज जागे। जब बाणी पढ़े, दो आंसू बहने लग जायें, जब उसकी याद आये तो बेअखत्यार दिल फूट आये। तब तो समझो ठीक, नहीं तो जिमनास्टकें हैं, सारी उमर करते रहो। क्राईस्ट ने तो यहां तक कहा है, Who do not know love cannot see God. जो प्रेम करना नहीं जानते वह प्रभु को पा नहीं सकते हैं। साफ़गोई है। सेन्ट जॉन थे। वह बूढ़े हो गये। उनको एक स्कूल में ले जाया गया कि यहां पर कुछ उपदेश दें। गये। बूढ़े थे बहुत। सिर उठाकर कहने लगे कि बच्चों आपस में प्रेम करो। एक बार यही कहा। फिर दुबारा सिर उठाकर यही कहा कि बच्चों आपस में प्रेम करो। फिर दो मिनट हुए फिर सिर उठाकर कहने लगे कि बच्चों आपस में प्रेम करो और चुप कर गये। जो सैक्रेटरी था कहने लगा, महाराज क्या आपने कोई और लेक्चर नहीं देना है ? कहने लगे मैंने जो देना था सब दे दिया। Love and all things shall be added unto you, प्रेम करना सीखो, सब बरकतें तुममें आ जायेंगी। बड़ी मोटी बात ! सब महापुरूषों ने यही कहा। कहते हैं हम इन्सान थे, हमारे अन्तर सांप की तरह यह कैंचली जो पहनी, यह

इन्सानों की थी, इसमें नाग बन गये, डस रहे हैं। जिसको डसते हैं, उसको ज़हर पड़ता है। कई कहते हैं भई हमारे अन्तर वह बात भूल नहीं सकती है। क्यों ? मीठी ज़बान में कितने पैसे लगते हैं आप बतायें। Kind words don't cost anything.

**बाणी तो अनमोल है जे कोई जाने बोल।**

बाणी तो अनमोल है, अगर कोई बोलना सीख जाये तो यही तुमको चूरी खिलाती है, यही तुमको दूर-दूर करती है। ज़बान मीठी रखो। ज़बान मीठी कब होगी ? जब अन्दर प्यार होगा। अगर दिल में नफ़रत है, ऊपर से मीठी बातें कहो तो बड़ी बुरी मालूम होती हैं। दिल-दिल की गवाही देता है। जिससे प्यार हो उससे कोई बुरा काम भी हो जाये, नहीं वह नहीं कर सकता भाई। कभी दिल नहीं मानेगा। अगर जिसके दिल में ग़लाजत भरी पड़ी है, वह ऊपर बड़ी मीठी बातें करे तो कहते हैं, देखा ! बड़ी बनावट बनाता है, देख चतुराई करता है। दिल दिल का साक्षी है। तो भाई प्रेम करो। प्रेम किसका नाम है ? इन्द्रियों के भोगों रसों का नाम प्रेम नहीं है याद रखो। यह मोह है। प्रेम है आत्मा को इससे आज़ाद करके प्रभु के साथ जुड़ना, उसका प्यार हो। और वह सब में है। सबका प्यार जो है, इसका नाम प्रेम है।

**सुभर भरे प्रेम रस रंग, उपजे चाव साध के रंग॥**

साधु क्या होता है ? वह प्रभु के और विश्व के प्रेम के Overflowing प्याले होते हैं, जिनको देखकर हमारे अन्दर चाव आता है कि भई हम भी ऐसे बन जायें।

**नानक नांव चढ़दी कला, तेरे भाणें सरबत दा भला।**

यह निशानी है, यही आदर्श सब महापुरूषों ने पेश किया है। किसी समाज में रहो। World Religious Conference हुई है कलकत्ते में, उसमें आखरी दिन मेरे कहने के बावजूद भी, फिर उन्होंने मुझे चुना President फिर अगले Term में। तो वह मुझे कहने लगे कि आप आशीर्वाद दो। मैंने कहा भई मैंने आशीर्वाद क्या देना है, महापुरूषों ने आगे ही दिये हैं। मैं यही बोला —

**नानक नांव चढ़दी कला, तेरे भाणें सरबत दा भला।**

तो हर एक समाज वाले जो आये थे सबने अपनी धर्म पुस्तकों से यही चीज़ पेश की है। अरे भई सब महापुरूष यही बात कहते हैं, ज़बांदानी अपनी अपनी है। हम क्योंकि

उनसे नावाकिफ़ हैं, नफरत करते हैं। बात तो यह है।

**कैंचली कर्म लगाई चित्त में हुआ मनुष्य से नाग रे।**

देखो ना, ज़बान ऐसी कि किसी को ठण्डक देने वाली है, यही आग जलाने वाली भी बन जाती है। हमदर्दी से बात करो, दूसरे के दिल को सहारा, टूटा हुआ दिल साबित हो जाता है। मीठी ज़बान में क्या लगता ? प्यार भरी ज़बान में ! तो यह कोई नई बात नहीं है, यही मैं अर्ज कर रहा हूं, कि एक ही महापुरूष नहीं, सारे महापुरूष एक ही बात कहते हैं, जिन्होंने हकीकत को पाया है। जो जाग उठे हैं, वह तो वही बात कहेंगे।

**बैठा नहीं समुझ सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे।**

कहते हैं हर एक इन्सान के अन्तर में सुखों का समुन्दर ठाठें मार रहा है, मगर, वह प्रेम और बैराग के बग़ैर मिलता नहीं है। प्रेम हो, याद रखो जो प्रेमी है, वह हजारों में बैठा हुआ भी सच्चा एकांती है, वह सच्चा बैरागी है। तुम किसी के ख्याल में महव बैठे हो, हजारों बैठे हों, तुम्हारा ख्याल उसी में जा रहा है। तो कहते हैं, प्रेम और बैराग, प्रेम हो तो बैराग सच्चा बने। बैराग़ किसको कहते हैं ? Attachment (लगन) किसी को न रहे, एक ही जगह प्रबल Attachment होगी, बाकी सब आज़ादी होगी। तो कहते है, प्रेम और बैराग के बगैर, इसके अन्तर सुखों का समुन्दर ठाठें मार रहा है, मगर अफसोस उसको पा नहीं सकता है। कोई कर लो, सबके अन्तर है। मगर जिनके अन्तर यह प्रगट हो गया है, उसका रस ले रहे हैं, उनकी सोहबत का नाम ही सत्संग है। वह हमको उस गति के पाने के लिये मददगार है। हम कहां बैठे हैं ? इन्द्रियों के घाट पर सो रहे हैं।

**खैंचे सुरत गुरू बलवान।**
**परदा दूर करे आँखन का निज दर्शन दिखलावे। साधो से सत्गुरू मोहे भावे॥**
**सन्त संग अन्तर प्रभु डीठा।**

बड़ी साफ बात है। अनुभवी पुरूषों की संगत ही में उभार भी मिलता है, Clear-cut चीज़ पेश होती है।

यहां पर अभी कुछ दिन हुये राघवाचार्य जी आये। वह वेदों शास्त्रों के ज्ञाता हैं। कहने लगे, जो हम ने सारी उमर में चारों वेद, छह शास्त्र, सब ग्रंथ पोथियां पढ़कर जिस चीज़ को पाया है, गुरू के चरणों में बैठकर सहज ही में वही तुम पेश कर रहे हो। गुरू साहिबों की बाणी से सहज ज़बान में वही चीज़ पेश की है, वही ग्रन्थों पोथियों का सार है। सौ सियाने एक ही मत। बात तो यही है। हमें नावाक़फ़ियत के सबब के कारण एक दूसरे से नफ़रत हो रही है।

**बेद कतेब कहो मत झूठे, झूठा सो जो ना बिचारे।**

बात तो यही है।

**साहिब भजे सो हंस कहाये, कामी क्रोधी काग रे।**

भई काम और क्रोध में जो लोग बह रहे हैं, काम में रूह गिरती है, Chastity is life, sexuality is death. ब्रह्मचर्य की रक्षा जिन्दगी है, और इसका पात करना मौत है। इससे दिल सही, दिमाग सही, आयु लम्बी होती है। ब्रह्मचर्य की रक्षा से। इसके पात करने का नतीजा क्या है ? दिल ठिकाने नहीं, जिसम काम नहीं करता है, कभी नींद है कभी आलस है, जो करना चाहता है कर नहीं सकता है। जिसम का घोड़ा बाहरी ताकतों से कभी ताकत लेकर खड़ा नहीं हो सकता है, जितना ब्रह्मचर्य की रक्षा से होता है। आज लाखों बड़ी भारी ताकत के देने वाली दवाईयों के इशितहार चलते हैं। लोग बरतते हैं। अगर इस एक की सम्भाल रख ले तो किसी दवाई की जरूरत नहीं, बल्कि दवाइयों से सिर्फ उभार होकर और सत्यानाश होता है। तो फिर आप सवाल करेंगे कि गृहस्त आश्रम वाले क्या करें ? भई शास्त्र मर्यादा के मुताबिक जीवन बनाओ। शास्त्र मर्यादा यह कहती है कि गृहस्थ आश्रम सबसे ऊंचा आश्रम है। जितने महापुरूष आये हैं, ज्यादातर गृहस्थ आश्रम में आये हैं। मगर उनका जीवन वह नहीं था जो हमने बना रखा है। हमने यही समझा विषय विकारों की मशीन है। एक, दो, चार, दस, यही दिन रात यही काम है, यही दीन और ईमान है। इसका नतीजा क्या है ? न दिल सही न दिमाग सही। आयु सौ वर्ष से पचास, चालीस पर आ गई है। अब आगे क्या होगा। काम में रूह गिरती है। अरे भई इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। यह कैसे बनेगा ? और काम में जो रूकावट है उसका नाम क्रोध है। तुम्हारी किसी कामना में रूकावट कोई हो, वह क्रोध में तबदील हो जाती है। उसकी निशानी क्या है ? जैसे

एक नाला बह रहा हो ना पानी का, उसमें एक पत्थर रख दो मोटा, बड़ा सा, तो क्या होता है ? वह पानी टकराता है, रूकावट बनती है, उसमें तो फिर दो चीजें बनती हैं। एक झाग पानी से पैदा होती है, और एक आवाज पैदा होती है, शोर होता है। अरे भई जिसको गुस्सा आता है, उसके मुंह में झाग आती है कि नहीं ? और ऊंचा बोलता है। यह याद रखो क्रोध वाला आहिस्ता नहीं बोल सकता है। बात तो यह है। कहते हैं, काम और क्रोध दो चीज़ें हैं जो इसको बहाये चली जाती हैं, यही दो चीजें अगर काबू कर ले तो काम न बन जाये ! मगर कैसे यह काबू हों ? जिस घाट से यह हमला करती हैं, उस घाट से ऊपर आओ ? यह इन्द्रियों के घाट से हमला करती हैं। काम हमला करता है आंखों के रस्ते से। क्रोध हमला करता है कानों के रस्ते। महापुरूष क्या करता है ? तुमको इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाता है, नाम के साथ जोड़ता है। बस।

**बिखे बन फीका त्याग री सखिये नाम महारस पियो।**

वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर नाम के रस के साथ जोड़ देता है। यह रस अपने आप रह जाते हैं। कहते हैं अगर कामी क्रोधी रहे तो काग बने रहे। कव्वे का कायदा है गन्दगी पर गिरना। मखी सारे दिन गन्दगी पर भिनभिनाहट करेगी, खुश्बू के नजदीक नहीं जायेगी। और कहते हैं, जो हन्स बन गये, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गये वह हन्स बन गये। इन्द्रियों के घाट पर रहे, कव्वे बने रहे।

**कागा हन्स न होयेंगे छोड़ो चतुराई।**

कौवा कभी हन्स नहीं बना। हन्स बनता है विवेक से, सत्य के ग्रहण करने से, असत्य से मुंह मोड़ने से। बड़ा साफ खोलकर समझा रहे हैं बात को। यह दो नरक के दर्वाजे हैं, यहां तक बयान किया है शास्त्रों में, काम, क्रोध और लोभ यह नरक के दर्वाजे हैं। एक में रूह गिरती है और दूसरों में फैलती है। जिसकी रूह गिरे, नीचे जाये, इन्द्रियों के घाट से ऊपर कैसे जायेगा वह ?

**जहां काम तहां नाम नहीं जहां नाम नहीं काम।**
**दोय एक जा न बसें रवि रजनी एक ठाम॥**

गृहस्थ आश्रम अगले ज़मानों में देखिये खास मियाद के लिये था, पच्चीस साल। बाकी जाओ जंगलों में, प्रभु को याद करो, पाकर लोगों को बताओ। आज क्या है ? हमारे अपने जीवन गन्दे हो गये, और बच्चों के गन्दे हो रहे हैं। कौन जिम्मेवार है ? हम

लोग। मैं तो अर्ज करूंगा, जो पुराने भाई हैं उनको पता है, जब हमारे भाई बहन पैदा होते थे, तो हम पूछते थे यह कहां से आये, तो कहते थे दाई दे गई है दाई। हम मान लेते थे। याने इतना पवित्र जीवन था हमारे माता पिताओं का कि हमको पता नहीं कि बच्चे कहां से आते हैं। आज छोटे बच्चे को पूछो वह भी बताता है। वह देखता है। सिनेमा जाते हैं, माता भी खुश हो रही है, पिता भी खुश हो रहा है, बच्चे भी नाच रहे हैं। वहां क्या देखते हैं ? Love Story. घरों की हालत खराब है। मैंने तो आगे भी कई बार अर्ज किया है कि जो भाई यहां आने वाले हैं, कम से कम अपने को सम्भालें। महापुरूष, किसी का जीवन लो, यहां पहले अखबार पढ़ो, Bed Tea पियो। बस ! खाओ पियो, जाओ मजे उड़ाओ। यह हालत बन रही है। कौन जिम्मेदार हैं ? हम लोग ! यही कहना पड़ेगा। जो आत्म विद्या थी वह अपने से भी निकल गई। बच्चों को क्या बतायेंगे ? और यह देखने से अफसोस आता है कि जिन के घराने की अपनी धर्म पुस्तकें हैं, वह उनको भी पढ़ते नहीं। बताओ क्या बनेगा। क्या हशर होगा दुनियाँ का। जितने भाई बहनें हैं, अगर होश से खड़े हो जायें, जहां बह चुके हैं बह चुके, आज से ही खड़े हो जाओ, देखो दो चार छह महीने में कितनी होश आ जाती है। कहा जाता है लोगों को और बड़े ज़ोर से ताकीद भी की जाती हैं कि भई डायरी रखो, अपने जीवन की पड़ताल रखो। किसी का बुरा चितवन न हो, सत्य को धारण करो, झूठ फ़रेब से बचो, ख्यालात को नेक, पाक और पवित्र बनाओ, निष्काम सेवा करो, सबके अन्तर परमात्मा है सबसे प्यार करो, मगर कोई मानता है ? कोई नहीं। ऊपर हां हां करेंगे, वही चाल चलते रहेंगे। नतीजा क्या है ? अपना नुकसान हो रहा है, किसी का क्या बिगड़ता है ? महापुरूष को क्यों रहम आता है ? वह देखता है कि मेरे भाई हैं, ज़लील हो रहे हैं। मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला था, वह निकलने का वक्त है। उसको दर्द होता है, नहीं तो उसकी कोई गर्ज़ नहीं मुआफ करना। पल्ले से खाता है, अपनी सिरदर्दी मुफ्त की मोल लेता है। तो कहते हैं हन्स बनो भई। काम बन जायेगा। नहीं तो कागवृत्ति में रहोगे। कागवृत्ति, अगर जो काम, क्रोध में लीन हो रहे हो। संयम का जीवन बनाओ। शास्त्र मर्यादा क्या कहती है ? जब जब औलाद की ख्वाहिश हो तब तब ताल्लुक हो। जब बच्चा पेट में आ जाये, जब तक बच्चा पेट में रहे, जब तक बच्चा पैदा होकर दूध पीता रहे, कोई ताल्लुक न हो।

मैं जर्मनी में गया। वहां मैंने बच्चे देखे बड़े हृष्ट पुष्ट। देखकर तबीयत खुश होती थी।

स्त्रियां हृष्ट पुष्ट। मैंने पूछा भई क्या करते हो। कहते हैं हम इसकी, ब्रह्मचर्य की पालना करते हैं। गैर मुल्क के लोग तुमसे फ़ायदा उठायें, तुम्हारे घर की चीज़, तुम्हीं भूखे मर रहे हो। हमारा यह पहलू निहायत कमजोर हो चुका है, मुआफ करना। होश में आओ भई, सम्भलो कभी तो। एक शेर का बच्चा काफी है पैदा करना, हजार गीदड़ों से।

**जननी है तो भक्त जन कै दाता कै सूर। नहीं तो जननी बांझ रहो काहे गंवावे नूर।**

जिसका ब्रह्मचर्य कायम है, उसके चेहरे पर रौनक है, उसकी आंख में टहक है। शादी हुई सत्यानाश मारा गया। दो चार महीने, बस गये। होश में आओ। यह बातें कहनी पड़ती हैं। अफसोस से कहनी पड़ती है। न कहें तो कौन कहे आप लोगों को ? बात तो यही है।

**साहिब भजे सो हंस कहावे कामी क्रोधी काग रे।**
**कहे कबीर सुनो भई साधो प्रगट पूर्ण भाग रे॥**

बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐ भाईयों, भाई करके पुकार रहे हैं, ऐ भाईयों होश में आओ। साहिब (प्रभु) को प्रगट कर लो, तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा। कहते हैं यह बड़े पूर्ण भागों से होता है। उसके साथ कौन लगता है, उस प्रभु, साहिब परिपूर्ण के साथ ?

**धुर कर्म पाया तुध जिनको से नाम हरि के लागे।**
**कहो नानक तैं सुख होवा तित घर अनहद बाजे॥**

यह निशानी दी है। फिर पूछा महाराज ! यह दौलत लें कहां से ? कहते हैं —

**जहां नाम मिले तैं जाओ।**

यह नहीं कहा कि कहां से लो। जहां यह दौलत है, वह परमात्मा ज्योति स्वरूप है, घट-घट वासी है, उसमें अखण्ड कीर्तन हो रहा है।

**राम नाम कीर्तन रतनवत हरि साधु पास रखीजै।**
**जो बचन गुरू सत् सत् कर माने तिसे आगे काढ़ धरीजै॥**

दौलत यह है नाम की, परीपूरण परमात्मा की दो इज़हार की सूरतें हैं। जहां से मिलती है, जाओ ले लो जो यह दे सके। अगर यह चीज़ नहीं मिली तो क्यों खामख्वाह जीवन बरबाद करते हो ? कबीर साहब ने क्या कहा —

**काचे गुरू को छांडते करत न लागे बार।**

आज गुरूडम बदनाम क्यों है ? उसका कारण क्या है ? कि उनमें यह समर्था है नहीं, Acting Posing स्वांग, लेक्चर, कथा, ज्ञान, बहुत कुछ हो रहा है। न खुद जागे हैं, न दूसरों को जगा सकते हैं। जो इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, अरे भई वह गिरते हैं। आज गिरें, दर परदा गिरें, Cat must be out of the bag. जब जाहिर होता है, कहते हैं It is all Gurudom. महाराज हमें नहीं चाहिये, हमें किताब अच्छी है। वह बिचारे भी सच्चे हैं। गुरूडम ने दुनियाँ को एक गहरी खन्दक में डाला है मैं यह अर्ज करूंगा। दुनियाँ में Black Market है, फिर भी शायद चार-छह आने तुमको रूपये में देते होंगे। अरे भई परमार्थ में इतनी Black Market हो रही है कि देते कुछ नहीं, गर्दनों पर सवार हैं। महापुरूष आके तुमको Awaken (जागृत) करते हैं। जो अपने पांव पर खड़ा है, तुमको पांव पर खड़ा करेगा। मजहब या समाज हमको आज़ाद करने के लिये बने थे। यही पांव की जंजीरें बन रही हैं, गले के तौक और हाथों की हथकड़ियाँ बन रहे हैं। रहो समाजों में। समाजें सब मुबारिक हैं। जरूर रहो। नहीं तो Corruption हो जायेगी। मगर रहकर जिस आदर्श के लिये समाजों में दाखिल हुए, वह न मिले तो। प्रभु की फौज में दाखिल हो जाओ। तो यह महापुरूषों की हमेशा से तालीम रही है। यहां पर मैं आपको अर्ज़ करूं मैंने कोई समाज नहीं खड़ी की। समाजें आगे बहुत हैं। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) फरमाते थे कि कुवें आगे ही बहुत लगे पड़े हैं, और कुवां लगाने की क्या जरूरत है ? पानी निकालो। पानी मौजूद है। तालीम वही है। जब जब महापुरूष आये, अपनी अपनी जबांदानी में पेश कर गये। चीज़ वही बयान की है जो सबके अन्दर है। मगर जब तक आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते यह दौलत दबी हुई आती है, दबी हुई चली जाती है। जीवन बरबाद चला जाता है।

**भीखा भूखा को नहीं सबकी गठड़ी लाल।**

कि ऐ भीख दुनियाँ में कोई भी भूखा नहीं है। सबके अन्तर वह अनमोल रत्न मौजूद है, परमात्मा, वह हमारा जीवन आधार है, मगर —

**गिरह खोल नहीं जानते ताते भये कंगाल।**

जड़-चेतन की ग्रन्थी है, जिसम का रूप बने बैठे हैं। जब तक यह इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आता, तब तक वह दौलत इसको मिलती नहीं। इतनी भारी दौलत के होते हुये भी वह भूखा मर रहा है। सारे महापुरूष यही कहते हैं। तो जिसको तुम याद

करते हो उसको पावो। पहले याद, याद उसकी जिसको पाना है। दुनियाँ को याद कर करके यह दुनियाँ हममें बस गई है। सोते में बरड़ा करके भी यह दुनियाँ हमारे अन्तर से निकलती है। अरे भई उसकी जगह जिसको पाना है उसकी याद बसाओ। इसका नाम है सुमिरन। समझे। इतनी याद बसा लो कि —

**एको जप एको सालाह। एको सिमर एको मन आह॥**

आहें भी उसी की निकलने लग जावें।

**एकस के गुण गावो अनन्त। मन तन प्रीत जाप भगवंत॥**

इतनी याद बढ़ जाये कि बरड़ाओ तो भी उसी की याद निकले। अब बरड़ाते हो तो दुनियां की याद निकलती है। क्योंकि वह भर रहा है ना अन्तर का वह जो Reservoir है Subconcious का। तो कबीर साहब कहते हैं कि अन्तर इतनी प्रबल याद प्रभु की बन जाये कि सपने में बड़ा कर भी उसी का नाम निकले, दुनियां न निकले, कहते हैं हम क्या देंगे।

**सुपनेहूं बरड़ाय के जित मुख निकसत राम।**
**तिस के पग की पाहुंनी मेरे तन को चाम॥**

उसके पांव की जूतियों के लिये मैं अपने जिसम का चमड़ा देने को तैयार हूं। अरे भई उसको पाना है। जिसको पाना है उसकी याद बसाओ। बड़ी मोटी बात। यह ज़रिया है। सिमरन पहली पौड़ी है। गुरू अर्जन साहब ने पूरी अष्टपदी सिमरन पर दी है। समझे ! यह पहला ज़ीना है।

**इक दो जीभ हो लख होये, लख होये लख बीस।**
**लख लख गेड़ा आखिये एक नाम जगदीश॥**

इतना जबर्दस्त सिमरन हो।

**सत्राह पथ हीड़ियां चढ़िये होय अतीत।**

यह प्रभु के पाने को पौड़ियें हैं, जो चढ़ गये सो चढ़ गये। उसके एक बार सिमरन, उसकी याद इतनी प्रबल हो कि और कोई याद न रहे। फिर जिसकी याद करते हो, उसके साथ जुड़ोगे। वह कब जुड़ोगे ? जब इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाओगे। बड़ी साफ़गोई है। कोई मुलम्मा नहीं,कोई बनावट नहीं, कोई ख़ैचतान का सवाल नहीं। किसी समाज में रहो, यह Man-Problem है। सब महापुरूषों ने इसको हल किया।

जो उनसे मिले इस जीवन को पा गये । जिनको मिलना नहीं नसीब हुआ वह बदकिस्मत हैं । अभी उनको प्रभु की तरफ़ से नहीं आया । मगर मैं यह अर्ज करूंगा, खासकर कि जिनको ऐसे महापुरूष मिल भी गये हैं और फिर भी वह परवाह नहीं कर रहे तो कितने बदकिस्मत हैं यह लोग ! जिन बिचारों को नहीं मिला, प्रभु ने दया नहीं की, किसी ऐसे महापुरूष का मिलना भी उसकी दया से है, ''कृपा करे तो सत्गुरू मेले ।'' पर मिल भी जायें और फिर भी न करे, बावजूद समझाने के भी न करे तो क्या कहना चाहिये ? बदकिस्मती ! जिनको रस्ता मिला है, वह पूरी तवज्जो से काम करें, जीवन का परहेज रखें, ताकि मन्जिल मकसूद मनुष्य जीवन में मिल जाये । जिनको नहीं मिले तो वह प्रभु से प्रार्थना करें । अगर उनके दिल में सच्ची तड़प है तो वह परमात्मा आप सामान करता है कि मेरा बच्चा मुझे मांग रहा है, किसी मिले हुए को मिला देगा । वह झोली फैला कर बैठे रहें, देना उसने है । झोली फैलाकर बैठना क्या है ? इन्द्रियों को दमन करके जीवन को नेक-पाक, सदाचारी रखकर, उसकी प्रार्थना करो । वह कोई न कोई सामान करेगा ।

**सत्गुरू को क्यों छोड़ दिया तैने नाम अपना क्यों छोड़ दिया ।**
**झुठ छोड़ा क्रोध न छोड़ा मधुर बचन क्यों छोड़ दिया ।**
**तैने सत्य बचन क्यों छोड़ दिया, तैने नाम जपन क्यों छोड़ दिया ।**
**झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ।**
**कौड़ी को तो खूब सम्भाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ।**

कौड़ी बदले रतन त्यागे, जिसम और जिसमानियत की कीमत क्या है ? यहीं के यहीं रह जायेंगे यह ! इसके अन्दर में अनमोल रतन बन्धा पड़ा है । कौड़ियों के बदले यह चीजें बेच रहा है । यूसुफ को एक टके के बदले बेच दिया और क्या है । रविन्द्रनाथ टैगोर ने एक नज्म लिखी है । वह कहता है कि हे प्रभु । मैं जानता हूं कि तुझ में लाइन्तहा दौलत है, मगर मैं इस घर के कूड़े करकट को बाहर नहीं फेंक सकता । आप दया करो । इतना Attachment (मोह) में जा रहा है । यह भूल निकल कैसे सकती है ? किसी जागते पुरूष के पास बैठो, होश आयेगी ।

**जैं सुमिरन ते अति सुख पाये सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ।**
**खालस एक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ।**

यह तीन चीजें ही रूकावट हैं, उसके और हमारे दर्मियान में, तन, धन और मन !

इसको बरतो, बरतने के लिये यह चीज़ मिली है। Make the best use of them. मगर जिस गर्ज़ के लिये है, उसके लिये यह मददगार हों।

**तेरी बीती जाती उमर हरि नाम बिना, तू सुमरिन करले मेरे मना।**
**पन्छी पंख बिना, हस्ती दन्त बिना नारी पुरूष बिना।**

पंखी के पर न हों यह कैसे हो सकता है ? हाथी के दान्त न हों तो उसको कौन पूछता है ? और स्त्री का पुरूष न हो तो उसकी क्या गति है ? ऐसे ही हरि नाम के बगैर जीवन की कोई गति नहीं।

**वैश्या पुत्र पिता बिन हीना, तैसे प्रणी हरि नाम बिना।**
**तू सुमरिन करले मेरे मना तेरी बीती जाती उमर नाम बिना।**
**दीया नैन बिना, रैन चन्द्र बिना और धरती मेघ बिना।**

मिसालें देकर समझाते हैं कि अगर आंख न हो, दीया जगता हो तो क्या है ! आंख होनी चाहिये ना ! ऐसे ही कहते हैं रात हो और चाँद न चढ़ा हो फिर किस काम की ? फिर मिसाल देते हैं, कि धरती हो मेघ न बरसे तो प्रफुल्लित कैस हो ? मिसालें देकर समझाते हैं।

**जैसे पण्डित बेद बिहीना तैसे प्राणी हरि नाम बिना।**

अगर उसको ज्ञान नहीं हुआ तो क्या है !

**तू सुमरिन करले मेरे मना तेरी बीती जात उमर हरि नाम बिना।**
**कूप नीर बिना धेनु सीर बिना, मन्दिर दी बिना।**

कहते हैं, मिसाल देते हैं, कि कुवां हो उसमें पानी न हो, फिर ! फिर फ़रमाते हैं कि गाय हो और दूध न देती हो, फिर कहते हैं, मन्दिर में दीप न जगता हो, क्या शोभा है ? कौन मानता है ?

**धेनु दुधेती बाहरी किते न आवे काम।**

सारे महापुरूष यही कहते हैं।

**जल बिन शाक कुम्हलावति उपजे नाहीं दाम॥**

कि हे प्रभु तेरे बगैर इन्सान का जीवन ही क्या है ?

**जैसे तरूवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥**

फलदार दरख्त हो, फल न देता हो तो किस काम का ?

**काम क्रोध मद लोभ निवारी, छोड़ विरोध तू सन्त जनां ।**

फिर आख़र वहीं आ गये ।

**कहे नानक शाह सुनो भगवन्ता, या जग में कोई नहीं अपना ।**
**तू सुमरिन करले मेरे मना, तेरी बीती जात उमर हरिनाम बिना ।**
**क्या तोहे तेरे मात पिता ने, इसी कारण है जग में जना ।**
**छोड़ तू जग की प्रीति अन्त को, नित रस रहो सत्नाम मना ।**
**डूब रहे मंझदार में मूर्ख, पार हुए कोई सन्त जना ।**
**कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना, और कभी तू जाए इससे भी मना ।**
**इकरस रहना सभी रस, अन्तर्द्वन्द जगत एक सपना ।**
**सब घर तजने पड़ेंगे तुझको, क्या पराया क्या अपना ।**
**इक दिन आया दूजे ठहरा, जायेगा यहां से तीजे दिना ।**
**कौंड़ी को तो गिन गिन राखे, स्वासों को नहीं मूढ़ गिना ।**
**शहिन्शाह है किस बिरते, जग मैं तैने तम्बू तना ॥**

'हर को नाम जप निर्मल करम' । बस ! यह धारण कर लोगे तो तुम्हारी कल्याण, मनुष्य जीवन सफल, किसी समाज में रहकर अगर यह काम नहीं हुआ तो मनुष्य जन्म बरबाद चला गया । तो यहां पर आपको पता है, हमने किसी समाज का रंग नहीं रखा है । अपनी -अपनी समाजों में रहो । मुझे अपनी समाज मुबारिक रहे । तुम्हें अपनी समाज मुबारिक रहे, जहां तुम हो । अपने-अपने बोले रखो । जो काम करना है, कर लो । इसके बगैर गति नहीं । जो-जो आपका बोला (सम्बोधन वाक्य) है, सब हमें मन्जूर, राम-राम, नमस्ते, सलामालेकम, जयदेवा, राधास्वामी, सब सब हमें मन्जूर है ।

✦ ✧ ✦

**रूहानी सत्संग नि:शुल्क भेजे जाते हैं ।**
**Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.**